हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL4**

निर्धारित समयः तीन घंटे   *Time allowed: Three Hours*

अधिकतम अंकः 250   *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 04 27/08/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	0	2	1	3	7	9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 144½

टिप्पणी (Remarks): बहुत अच्छा प्रयासरत रहें। सतत अध्ययन अपेक्षित

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः 10 × 5 = 50

(क) हरिमुख निरखि निमेख बिसारे।
ता दिन तें मनो भए दिगंबर इन नैनन के तारे।।
घूँघटपट छाँड़े बीथिन महँ अहनिसि अटत उघारे।।
सहज समाधि रूपरुचि इकटक टरत न टक तें टारे।।
सूर, सुमति समुझति, जिय जानति, ऊधो! बचन तिहारे।
करै कहा ये कह्यों न मानत लोचन हठी हमारे।।

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यांश आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा संकलित एवं सूरदास द्वारा रचित 'भ्रमरगीत सार' से उद्धृत है। प्रस्तुत पद्यांश में गोपियाँ उद्धव को समझा रही हैं कि किस प्रकार उनका मन कृष्ण प्रेम व कृष्ण दर्शन में ही रमता है अन्यत्र कहीं नहीं।

व्याख्या : गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव हमने कृष्ण के मुख (सूरत) के दर्शन से तृप्त होकर निमेष को भुला दिया है। जिस दिन से कृष्ण का प्रेम प्राप्त हुआ है उस दिन से घूँघट छोड़कर हम कृष्ण के दर्शन में ही रत रहती हैं। ये नयन मानते ही नहीं इन्हें बहुत समझाया बुझाया, सर्व यत्न करके देख लिया, परन्तु

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन नेत्रों ने कृष्ण भक्ति की टेक पकड़ रखी है और कृष्ण से हटने का नाम ही नहीं ले रहे हैं। हम तुम्हारे वचनों को समझती हैं, पर हमारे ये नेत्र हठ कर के बैठ गए हैं।

विशेष :1· कृष्ण के प्रति अगाध प्रेम को गोपियाँ सहज उपमाओं एवं भावक्रोक्ति के माध्यम से प्रदर्शित कर रही हैं।

2. "मनो परे दिगंबर" में उत्प्रेक्षा अलंकार का सुन्दर प्रयोग

3. ब्रजभाषा का कोमलतम श्रृंगारप्रधान रूप सूर के लालपदों में देखने को मिलता है।

अच्छा

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) फिरि फिरि चितु उत ही रहतु, टुटी लाज की लाव।
अंग-अंग-छबि-झौरँ मै भयौ भौरे की नाव।।

~~प्रसंग. प्रस्तुत पंक्तियाँ~~

बिहारी रचित सतसई (बिहारी) से उद्धृत

व्याख्या : कवि कहता है कि नायिका का मन बार-बार नायक के पास ही जाता है वह किसी लाज की परवाह नहीं करता। नायिका के अंग-अंग पर नायक की छवि बसी हुई है। तथा चाहते हुए भी नायिका नायक से अपना मन नहीं हटा पा रही है।

विशेष : 1. उपमा, रूपक तथा अनुप्रास अलंकार का सुन्दर प्रयोग

2. श्रृंगार रस से ओत-प्रोत पंक्तियाँ

2/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त;
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!

प्रसंग: प्रस्तुत पद्यखण्ड महाप्राण छायावादी कवि 'सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला' की कालजयी कविता 'राम की शक्तिपूजा' से उद्धृत हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में जाम्बवंत राम को शक्ति की मौलिक कल्पना की सलाह देते हैं। साधना से सिद्धि प्राप्ति का मार्ग समझा रहे हैं। नैराश्य में घिर श्री राम की विजय का मार्ग सुनिश्चित करने का जाम्बवंत का यह प्रयास विवेकपूर्ण है।

व्याख्या: जाम्बवंत कहते हैं कि शक्ति 'नैतिकता' की नहीं 'साधना' की की आधार हैं, पर यदि साधना नैतिक और अनैतिक दोनों पक्षों से हो, तो शक्ति नैतिकता के पक्ष में ही ~~स्थायी~~ रहेगी। अत: हे रघुनन्दन यदि रावण अनैतिक होकर भी शक्ति की सहायता से आपको त्रस्त कर सका है, तो आप सिद्धि के मार्ग से निश्चित ही रावण को ध्वस्त करने में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सफल होंगे। आप युद्ध त्यागकर शक्ति की आराधना मौलिक नियमन से करिए और सिद्धि को प्राप्त करिए।

विशेष : 1. 'शक्ति की मौलिक कल्पना' का अर्थ विभिन्न आलोचकों ने विभिन्न दृष्टियों से किया है। अर्थ व्यापकता के कारण ये पंक्तियाँ तत्कालीन स्वतन्त्रता संग्राम, निराला के आत्मसंघर्ष व सीता मुक्ति तीनों से संबद्ध हो जाती हैं।

2. तत्सम बहुला किन्तु बोधगम्य भाषा की सामासिकता दर्शनीय है

3. श

अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(घ) काम-मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम,
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल बनाते हो असफल भवधाम।
दु:ख की पिछली रजनी बीच विकसिता सुख का नवल प्रभात,
एक परदा यह झीना नील छिपाये है जिसमें सुख गात।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावाद के स्तम्भ 'जयशंकर प्रसाद' के भावप्रधान महाकाव्य 'कामायनी' से ~~उद्धृत हैं। प्रस्तुत~~ के के ~~'श्रद्धा सर्ग'~~ 'श्रद्धा सर्ग' से उद्धृत हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में कवि 'कामाध्यात्मवाद' की वैचारिक स्थापना से अर्था लेते हुए सृष्टि में 'कामेच्छा' व कर्म का महत्व बता रहे हैं।

व्याख्या: श्रद्धा मनु को समझाते हुए कहती है कि यह काम मंडल सृष्टि की इच्छा का ही परिणाम है सृष्टि के विरुद्ध नहीं। तुम काम चेतना की ~~~~ अवहेलना करके सृष्टि को असफल मत बनाओ। दु:ख की रात्रि के बीच अब सुख का नव सूर्योदय हुआ है। और धीरे-धीरे सुख की सृष्टि का समय आने वाला है, अत: सृष्टि के इस सहज नियम को स्वीकारो और संतति के विस्तार में अपना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सहयोग दो।

विशेष : 1. आलोचकों ने इन पंक्तियों में फ्रॉयड के 'मनोविश्लेषणवाद' की लिबिडो की धारणा का प्रभाव देखा है, जिसे भारतीय दर्शन में 'कामाध्यात्मवाद' से जोड़ा जा सकता है।

2. भाषा तत्समीकृत होने के बावजूद बोधगम्य, सहज एवं सुन्दर है।

3. 'एक परदा यह झीना नील' में रूपक अलंकार का प्रयोग किया गया है।

4. दुःख और सुख की उपमा रात्रि व प्रभात से की गई है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) "धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन, जिसके लिये सदा ही किया शोध!
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका।"
वह एक और मन रहा राम का जो न थका;

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ: प्रस्तुत पद्यखण्ड महाप्राण कवि 'सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला' की कविता 'राम की शक्तिपूजा' से उद्धृत है। पंक्तियों में पूजा का अंतिम इंदीवर माँ दुर्गा के उठा ले जाने के पश्चात् की राम की आत्मधिक्कार की स्थिति का वर्णन किया गया है।

व्याख्या: राम आत्मधिक्कार की अवस्था में जीवन को कोसते हुए ~~कहते~~ सोचते हैं कि धिक्कार है ऐसे जीवन को जो सदा विरोध का ही भागी रहा हो। ऐसे साधन को भी धिक्कार है जिसके लिए सदैव संघर्ष करना पड़ा हो। अंतिम लक्ष्य सीता की मुक्ति था, वह भी अपूर्ण रह गया। परन्तु यहाँ राम का व्यक्तित्वांतरण होता है और अदम्य जिजीविषा से ओत-प्रोत उस मन का उदय होता है जो अभी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हार मानने को तैयार नहीं है।

विशेष: 1. प्रस्तुत पंक्तियों में आत्मधिक्कार सबसे प्रमुख लक्ष्य 'सीता की मुक्ति' में असफल होने के कारण है।

2. पंक्तियों को 'नारी मुक्ति' और 'राष्ट्रमुक्ति' से भी जोड़कर देखा गया है।

3. जानकी के लिए 'प्रिया' शब्द का प्रयोग नारी के प्रति मध्यकालीन मानसिकता से निकलकर समतामूलक भावना की ओर संकेत है।

4. भाषा तत्समबहुला, ओजगुण प्रधान है ~~इसीलिए~~ महाप्राण ~~8~~ वर्णों का प्रयोग सुन्दर बन पड़ा है।

अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'राम की शक्ति पूजा' के आधार पर निराला की भक्ति-भावना का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'राम की शक्तिपूजा' निराला की वह रचना है जो विभिन्न संदर्भों में विभिन्न अर्थों को वहन करने की क्षमता रखती है। एक महान रचनाकार की सर्जना का उत्कृष्टतम रूप वही होता है कि उसकी रचना किसी एक संदर्भ व समय विशेष में न बँधकर कालजयी हो जाए एवं अर्थवैविध्य को धारण कर विभिन्न विभिन्न प्रसंगों की वाहक बने।

विशंभर मानव जैसे आलोचकों ने 'राम की शक्तिपूजा' की व्याख्या 'निराला के आत्मसंघर्ष', 'स्वतंत्रता संघर्ष' व सीतामुक्ति से इतर निराला की भक्ति-भावना के प्रक्षेपण के रूप में की है।

यह सर्वविदित सत्य है कि पत्नी एवं पुत्री की मृत्यु के पश्चात प्रमुख रूप से निराला भक्ति-भावना में रत हो गए थे और इसी संदर्भ में आलोचकों ने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कविता में निराला की भक्ति-भावना को खंगालने का प्रयास किया है।

'राम की शक्तिपूजा' कृतिवास रामायण से कथानक का आधार लेते हुए राम-कथा के उस प्रसंग को उठाती है जहाँ कि राम नैराश्य में डूबे हुए हैं। इस तरह निराला ने पारंपरिक भक्ति-भावना से निकलकर राम के ईश्वरीकरण की बजाय मानवीकरण पर ध्यान केंद्रित किया है। उनके राम ~~आरा~~ 'सगुण भक्ति' के आराध्य तो हैं, पर तुलसी के राम की संशय-हीनता और सर्वशक्तिमान स्वरूप को धारण न करते हुए मानवीकृत गुणों को धारण करते हैं।

निराला का अधिकतर समय बंगाल में भी गुजरा, इसलिए उनपर 'शाक्त' परंपरा का भी प्रभाव था जो कि कविता में 'शक्ति की प्रधानता' से दर्शित हुआ है, परन्तु इलाहाबाद व ~~पूर्वी~~ पूर्वी उत्तरप्रदेश के संस्कारों से ओत-प्रोत

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निराला 'हनुमान भक्ति' व शक्ति को भी प्रमुखता से प्रक्षेपित करने में मग्न दिखते हैं।

यूँ तो समन्वय की चेतना के लिए निराला के प्रिय-कवि तुलसीदास का नाम प्रमुखता से लिया जाता है, परंतु फिर भी योग के प्रति तुलसी की खीझ 'गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग' जैसी पंक्तियों में संप्रेषित हो ही जाती है, परन्तु निराला ने समन्वय चेतना का अगला स्तर छूते हुए शक्ति की आराधना को योग के माध्यम से करवाकर योग व भक्ति में अद्भुत समन्वय स्थापित किया है। उनकी शक्ति राम से अलग तो हैं जो भक्ति मार्गी सिद्धान्तों के अनुकूल है, पर उनकी साधना के लिए योग मार्ग ही निराला ने उचित माना है।

भक्ति में भी साहस का मिश्रण करते

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हुए उन्होंने कबीर की परम्परा का पालन किया है 'हग बंधन' और 'प्रेम न बारी उपजै' की संवेदना में ऐक्य स्थापित किया है।

इस प्रकार राम की शक्तिपूजा में निराला की संश्लिष्ट भक्ति भावना का रूप दिखता है जो भक्ति, योग, वैष्णव, शाक्त व शैव परंपरा के सुन्दर संयोग से बना है।

अच्छा, 11½/20

शेषनाग कहते हैं – विष्णु के अवतार

निराला वेदांती विचार से प्रभावित रहे हैं

– प्रकृति ईश्वरीय प्रतीक के रूप में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) निराला के आत्मसंघर्ष के परिप्रेक्ष्य में 'राम की शक्तिपूजा' पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'राम की शक्तिपूजा' संश्लिष्ट अर्थ-व्यंजना को धारण करने वाली कविता है जिसका अर्थबोधन कुछ आलोचकों ने स्वाधीनता संघर्ष के परिप्रेक्ष्य में तो किसी ने 'सीता-मुक्ति' के संदर्भ में किया है। इसी क्रम में 'विश्वंभर मानव' जैसे आलोचकों ने इसे निराला की निजी व्यथा बताते हुए 'निराला का आत्म संघर्ष' बताया है।

इष्टव्य हो कि निराला 'सरोज की मृत्यु' के बाद सघन नैराश्य में डूबे हुए थे और यह वही नैराश्य का भाव है जो सरोज स्मृति से होते हुए 'है अमानिशा' के अंधेरे तक व्यक्त हुआ है। यह अंधकार 'शक्ति के अनैतिकता के पक्ष में होने को लेकर ही था, जिसका कारण 'आर्थिक तंगी हो या साहित्यिक क्षेत्र में परंपरावाद के कारण निराला को

रघुनाथ सिंह (आतंक)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

मिली अस्वीकृति । यही आर्थिक कारण उनकी पत्नी और पुत्री की मृत्यु के कारण बने है और आलोचकों का मानना है कि यही नैराश्य अभिव्यक्ति 'रवि के अस्त होने' से लेकर "गगन घन अंधकार' तक व्यक्त हुआ है।

परन्तु अपने पूज्य राम की तरह निराला भी महाप्राण व्यक्तित्व के धनी है वे साधारण ही जीवन को अस्वीकार करने की मुद्रा में नहीं है। 'राम की शक्तिपूजा' में उनका यही महाप्राण रूप 'वह एक और मन रहा राम का जो न थका' के माध्यम से व्यक्त हुआ है। भलेही वे 'पूजा का अंतिम इंदीवर' सरोज की मृत्यु के बाद 'धिक जीवन को जो पाता ही आया हो विरोध' की स्थिति में हो, परन्तु यहाँ उनका महाप्राण रूप जाग्रत होता है और वे फिर संघर्षरत होने की प्रतिज्ञा करते है।

निराला राम का सौन्दर्य सौष्ठव भी निराला के शारीरिक गठाव के समान

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

होने के कारण यह बात और प्रखर हो जाती है कि 'राम का संघर्ष' वास्तव में निराला का ही आत्मसंघर्ष है। एक हद तक यह निराला के काव्यकौशल का ही प्रमाण है कि वे कविता को विभिन्न संदर्भों से जुड़ता कर सके हैं।

राम शक्ति की साधना योग प्रक्रिया के माध्यम से करते हैं। निराला भी योग मार्ग से जुड़े थे।

राम जीवनपर्यन्त संघर्षरत रहे। निराला भी हमेशा संघर्षों से जूझते रहे।

अच्छा

$\frac{8\frac{1}{2}}{15}$

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान मे कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) "भारत-भारती में निहित नवजागरण चेतना की सीमाओं का उद्‌घाटन कीजिये। 15

'भारत-भारती' राष्ट्रकवि 'मैथिलीशरण गुप्त' द्वारा 1909 में रचित काव्य है। 1909 का दौर वह दौर था जब नवजागरण की चेतना अपने चरम पर थी। एक तरफ भारतेन्दु अतीत के गौरवमयी चित्रांकन से इस परंपरा को समृद्ध कर चुके थे, तो वहीं 'जयशंकर प्रसाद' जैसे छायावादी कवि भी इसे स्वतन्त्रता संघर्ष में ऊर्जा डालने के प्रयास के रूप में अपना रहे थे।

गुप्त जी ने भी अतीत की महानता से वर्तमान की दुर्दशा को उद्धार कर स्थापित करते हुए नवजागरण की चेतना का निर्वाह करने का प्रयास किया है। जहाँ एक तरफ वे अतीत के गुण गाते हुए लिखते हैं कि

"सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है, उसका कि जो ऋषिभूमि है वह कौन? भारतवर्ष है॥"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

तो दूसरी तरफ वे धर्म-बहिर्गमन व ब्राह्मणों में व्याप्त अज्ञान, अत्रियों में व्याप्त विषयोन्मुखता आदि के माध्यम से वर्तमान की दुर्दशा को चित्रित करते हैं।

परन्तु उनकी नवजागरण चेतना आर्य-प्रधान, पुरुष प्रधान व हिन्दू प्रधान होने के कारण एक बड़े जन-समूह को अपनी चेतना में सम्मिलित नहीं कर पाती। वे मुस्लिम शासन के काल को अंधकार युग मानते हुए लिखते हैं

" हैं निशिचरों के हाथ से सुर मूर्तियाँ खण्डित हुईं।
बहु मन्दिरों की वस्तुओं से मस्जिदें मण्डित हुईं॥ "

वहीं वे नारी के प्रति मध्यकालीन दृष्टिकोण प्रस्तावित करते हुए पुरुष से स्वतन्त्र व्यक्तित्व की अपेक्षा नहीं करते। आर्यों का महिमामण्डन करते हुए वे दक्षिण भारतीय वर्ग को अपने काव्य का भाग नहीं बना पाते।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वे लिखते हैं

"वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिए
जीते न थे
वे स्वार्थरत हो मोह की मदिरा कभी
पीते न थे"

हालाँकि उन्होंने 'हिन्दू' नामक रचना में हिन्दू का तात्पर्य समस्त भारतवासियों से बताया है, परन्तु तब भी भारत-भारती में रचनाकार का कुछ हद तक परंपरागत हिन्दूवादी, कुलवादी व आर्यवादी दृष्टिकोण सीमा बनकर ही उभरा है।

अंग्रेजी सत्ता के शासन काल के भारत की समस्याओं का जिक्र तो है, परंतु सीधे तौर पर अंग्रेजी सत्ता को दोषी नहीं ठहराया गया है।

राष्ट्रीय आंदोलन, बंग-भंग, स्वदेशी आदि की भी उपस्थिति कम है नहीं है।

अच्छा
और बेहतर हो सकते हैं।

8/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'B'

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) केवल नाराज़ ही नहीं, लड़ता था बाकायदा हमसे कि आप से पढ़े लिखे लोग खाली तमाशबीन ही बनकर बैठे रहेंगे तो इन गरीबों की लड़ाई कौन लड़ेगा? जहाँ दिन-दहाड़े इतना जुलुम होता हो, वहाँ कोई कैसे अलग-थलग बैठकर खाली कागज पोतता रह सकता है।

संदर्भ: प्रस्तुत गद्यखण्ड नवलेखन के दौर की सशक्त हस्ताक्षर 'मन्नू भंडारी' के राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से उद्धृत हैं। गद्यखण्ड में 'महेश' मि. सक्सेना के समक्ष गवाही देते हुए बिसू के चरित्र को उद्घाटित कर रहा है और बता रहा है कि बिसू हरिजन टोला की घटना व सभ्य समाज की निष्क्रियता से कितना व्यथित था।

व्याख्या: महेश बताता है कि बिसू समाज के पढ़े-लिखे लोगों की तटस्थता से अत्यन्त क्रोधित था और हमसे लड़ता था कि आप जैसे साधन सम्पन्न जागरूक लोग यदि अन्याय को ऐसे होते देखते रहेंगे, तो शोषण का चक्र कैसे बन्द होगा। किसी की आत्मा कैसे इतनी संवेदनहीन हो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सकती है कि दिन-दहाड़े लोग जिन्दा जला दिये जायें और वह सिर्फ कागज रंगने में, निष्क्रिय स्थूल चर्चाओं में व्यस्त रहे।

विशेष: 1. पंक्तियों में 'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी की निष्क्रियता को उद्घृत करने का प्रयास किया गया है।

2. चरित्रोद्घाटन की उस शैली का प्रयोग जहाँ एक चरित्र दूसरे चरित्र की विशेषताएँ बताता है। मन्नू भंडारी सभी शैलियों के ~~सम्यक~~ उचित प्रयोग के कारण चरित्र योजना को सफल बना पाई हैं।

3. "प्रश्नवाचक" वाक्यों व आम जन की सहज भाषा के ~~प्रयोग~~ ने बोधगम्यता में वृद्धि की है।

अच्छा

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रक्खा है, इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनि है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ 'छायावादी कवि' व ऐतिहासिक नाटकों के पुरोधा श्री 'जयशंकर प्रसाद' के नाटक 'स्कन्दगुप्त' से उद्धृत हैं। यहाँ 'देवसेना' प्रकृति की समरसता का वर्णन अत्यन्त आतमयी तरीके से कर रही है।

व्याख्या: देवसेना कहती है कि ~~प्रत्ये~~ प्रकृति के प्रत्येक अंग में व प्रत्येक वस्तु में सौन्दर्य है, संगीत है। परमाणुओं के मिलने में समरसता है। पत्तियों के हिलने में भी लय व संगीत है। मनुष्य के विषमता के कारण इस लय को समझ नहीं पाता और विश्ववीणा के संगीत से समरस नहीं हो पाया। झूठे ज्ञान को दिखाते हुए प्रकृति से अलग-थलग चलने का प्रयास कर रहा है। ~~पक्षि~~ जबकि पक्षियों ने विश्ववीणा में अपना स्वर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मिला लिया है, इसीलिए उसके बोलने में संगीत की मधुरता है।

विशेष: 1. देवसेना के चरित्र के माध्यम से प्रसाद ने भावुक, वियोगमूलक 'नारीदृष्टि' को ~~प्रस्तावित~~ प्रक्षेपित करने का प्रयास किया है जो प्रसाद की नारीदृष्टि से संगत है।

2. ~~०~~ ~~२~~ 'शैवाद्वैतवादी दर्शन' के समरसता के सिद्धान्त से युक्त पंक्तियाँ

3. तत्समबहुला एवं बोधगम्य भाषा का प्रयोग

4. 'विश्व-वीणा' में रूपक अलंकार का प्रयोग सुन्दर बन पड़ा है।

अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हा! भारतवर्ष को ऐसी मोह निद्रा ने घेरा है कि अब इस के उठने की आशा नहीं। सच है, जो जान-बूझकर सोता है उसे कौन जगा सकेगा? हा दैव! तेरे विचित्र चरित्र हैं, जो कल राज करता था वह आज जूते में टाँका उधार लगवाता है।

प्रसंग: प्रस्तुत पंक्तियाँ नवजागरण के प्रणेता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटक 'भारत दुर्दशा' से उद्धृत हैं। पंक्तियों में अतीत की महानता के कंट्रास्ट में वर्तमान की दुर्दशामयी स्थिति को दिखाने का प्रयास किया गया है।

व्याख्या: भारत-भाग्य कहता है कि ये भारत को क्या हुआ। लोभ-मोह आदि दुर्व्यसनों एवं आलस ने भारत की वह दशा कर दी है कि अब भारत के दोबारा व्यवस्थित होने की कोई आशा बाकी नहीं रही। सच ये है कि भारतवर्ष की यह दशा उसके अपने आंतरिक कारणों से है और ऐसे में उसका उबरना बहुत कठिन है। जो भारत कल सोने की चिड़िया कहलाता था, उसकी आर्थिक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्थिति अब इतनी खराब हो गई है कि उसे छोटी-छोटी जरूरतों के लिए भी अन्य पर आश्रित रहना पड़ता है।

विशेष: 1. पंक्तियों में नवजागरण की चेतना से प्रभावित लेखक 'अतीत की महानता' के माध्यम से 'सांस्कृतिक आदर्शवाद' को स्थापित कर रहा है।

2. ऐसी ही भावना मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'भारत-भारती' में दिखती है।
" सम्पूर्ण देशों से अधिक जिस देश का उत्कर्ष है।
उसका कि जो ब्रह्मभूमि है वह देश भारतवर्ष है "।

3. 'भारत' का मानवीकरण किया गया है

4. 'जूते में उधार टाँके लगवाना' मुहावरे का व्यंग्यपूर्ण प्रयोग।

अच्छा

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) ऐसा आतंक आपने कहीं देखा नहीं होगा, साहब! लोगों के घर, ज़मीन और गाय-बैल ही रेहन नहीं रखे हुए हैं जोरावर और सरपंच के यहाँ, उनकी आवाज़ और जबान तक बंधक रखी हुई है। कोई चूँ तक नहीं कर सकता है।

संदर्भ: प्रस्तुत गद्यखण्ड नवलेखन के दौर की सशक्त महिला लेखक 'मन्नू भंडारी' के राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से उद्धृत है। पंक्तियों में जातिव्यवस्था का अन्याय एवं ~~सभी~~ परंपरागत शक्ति संतुलन की कुत्सित प्रथा गरीबों के शोषण की मार्मिकता के साथ कि सक्सेना के सामने ग्रामीणों द्वारा वर्णित की जा रही है।

व्याख्या: जोरावर (जमींदार) का ऐसा आतंक व शोषण का स्वरूप यह है कि उसने लोगों के सारे आर्थिक संसाधन अपने यहाँ गिरवी रख रखें हैं। लोग जमींदार की कृपा पर पलते हैं और किसी की हिम्मत नहीं कि उसके सामने कुछ भी बोल सके। कुछ भी बोले तो उसका दमन दर्दनाक हो जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष : 1. 'स्वतंत्रता -प्राप्ति के पश्चात भी गाँवों में परंपरागत व्यवस्था ~~को~~ अनवरत जारी थी' इसका एक ~~स~~ नग्न दृश्य लेखिका ने प्रस्तुत किया है।

2. प्रेमचन्द ने भी होरी के माध्यम से जमींदारी का यही रूप प्रस्तुत किया था। " ~~जब~~ अपनी गर्दन दूसरे के पैरों तले दबी हो तो पैरों को सहलाने में ही भलाई है"।

3. जमींदारी और साहूकारी शोषक वर्ग के दो प्रमुख रूप बनकर उभरे हैं।

4. ~~दलितों~~ व

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) यह तुम नहीं, तुम्हारा स्वार्थ बोल रहा है। स्वार्थ को इतनी छूट देना ठीक नहीं कि वह विवेक को ही खा जाए। अखबारों को तो आज़ाद रहना ही चाहिए। वे ही तो हमारे कामों का, हमारी बातों का असली दर्पण होते हैं। मेरा तो उसूल है कि दर्पण को धुंधला मत होने दो। हाँ, अपनी छवि देखने का साहस होना चाहिए आदमी में।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसंग: प्रस्तुत गद्यखण्ड मन्नू भंडारी द्वारा रचित 'राजनीतिक उपन्यास' 'महाभोज' से लिया गया है। पंक्तियों में दा साहब लखन द्वारा अखबारों की बुराई करने पर उसे समझाते हुए लोकतन्त्र में अखबारों की आजादी का महत्व बता रहे हैं।

व्याख्या: दा साहब कहते हैं कि अपने स्वार्थ के लिए विवेक को भूल जाना उचित नहीं। आज़ाद अखबार लोकतन्त्र की धुरी हैं। वे ही राजनेताओं तक जनता का मत पहुँचाते हैं व 'फीडबैक' की तरह कार्य करते हैं। राजनीतिक ~~आदर्शों~~ आदर्शों को दिखाते हुए दा साहब कहते हैं कि अपने कर्मों का फल व अपनी आलोचना सुनने को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हर राजनेता को तैयार रहना चाहिए।

विशेष :

1. राजनेताओं की 'कथनी व करनी' में अंतर तथा आदर्शों के दिखावे को प्रदर्शित किया गया है।

2. मीडिया को लोकतन्त्र के चतुर्थ स्तंभ के रूप में महत्व दिखाया गया है।

~~3. दर्पण के माध्यम से ... मीडिया~~

3. दर्पण से मीडिया की तुलना में 'उपमा' का सुन्दर प्रयोग।

अच्छा

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) "लेखक ने कला के अनुराग से काल्पनिक चित्र में ऐतिहासिक वातावरण के आधार पर यथार्थ का रंग देने का प्रयास किया है।" -दिव्या के संबंध में अपनी इस स्वीकारोक्ति के निर्वाह में यशपाल कहाँ तक सफल हो गए हैं? युक्तियुक्त उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'दिव्या' यशपाल कृत ऐतिहासिक उपन्यास है जो अपनी रचनात्मक विशिष्टताओं के कारण आलोचना जगत में सम्मान का अधिकारी है। लेखक ने प्राक्कथन में ही अपने उद्देश्य को प्रस्तावित करते हुए कहा है "दिव्या इतिहास नहीं है" लेखक ने स्वयं बताया है कि जिस काल को लेकर दिव्या की रचना हुई है, उस काल का "इतिहास यथेष्ट प्राप्य नहीं है और जो प्राप्य है उस पर लेखक का विशेषाधिकार नहीं है" अतः लेखक की स्वीकारोक्ति है कि दिव्या को इतिहास के पुनर्लेखन का प्रयास न समझा जाए बल्कि एक मौलिक रचनात्मक प्रयास की दृष्टि से अध्ययन व मूल्यांकन हो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दिव्या में जो काल खंड लिया गया है वह बौद्ध काल में 185 ई. के आस-पास का है। लेखक ने पुष्यमित्र, पतंजलि व मिलिंद जैसे ऐतिहासिक चरित्रों व मथुरा तथा सागल जैसे नगरों को माध्यम बनाते हुए इस कालखण्ड का वातावरण तैयार किया है। लेखक ने उस समय की राजनीतिक भाषा के शब्द जैसे कि 'अस्थानागार', 'धर्मस्थ', 'महाबलाधिकृत' इत्यादि का प्रयोग भी ऐतिहासिक वातावरण प्रदान करने के उद्देश्य से किया है।

पुष्प, जागृत आगारिक केन्द्र

परन्तु लेखक ने जिन भी ऐतिहासिक चरित्रों को लिया व सहयोगी नहीं मात्र सूचना के रूप में उपन्यास में आए हैं। उपन्यास में जो भी सहयोगी चरित्र हैं वे काल्पनिक ही हैं चाहे वह दिव्या हो, पृथुसेन हो, रुद्रधीर हो या प्रेस्थ हो।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

अतः चरित्र योजना यह स्पष्ट करती है कि रचना का मूल आधार कल्पना ही है, इतिहास तो वातावरण मात्र है।

लेखक की इतिहास दृष्टि एकदम स्पष्ट है वे लिखते हैं "इतिहास विश्वास की नहीं, विश्लेषण की वस्तु है" मनुष्य को इतिहास का प्रयोग वर्तमान की समस्याओं का अतीत में समाधान खोजने के उद्देश्य से करना चाहिए। यशपाल लिखते हैं "वर्तमान में अपने को असमर्थ पाकर भी हम इतिहास में अपनी क्षमता का परिचय पाते हैं", इसी उद्देश्य से यशपाल ने वर्तमान सामाजिक यथार्थ चाहे वह पृथुसेन के माध्यम से वर्ण-व्यवस्था का उद्घाटन हो या 'दिव्या' के माध्यम से नारी के प्रति पुरुष वर्ग का शोषण परक रवैया हो, चाहे वह धर्मान्धता व अंधविश्वासों से ओत-प्रोत धार्मिक संरचना का स्वरूप हो, सभी वर्तमान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कुप्रथाओं का सफल एवं भावुक उद्घाटन किया है।

यशपाल ने ऐतिहासिक वातावरण की मर्यादा रखते हुए 'मार्क्सवादी मूल्यों' का भी उतना ही प्रक्षेपण किया है जितना उस काल में संभव था एवं वैचारिकी के स्थूल प्रक्षेपण से बचे हैं।

अतः यशपाल ऐतिहासिक वातावरण के आधार पर यथार्थ का रंग भरने में पूर्णतः सफल रहे हैं, इसमें कोई दोराह नहीं।

दो राय (संदेह)

अच्छा

12/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नायकत्व की दृष्टि से 'मैला आँचल' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'मैलाआँचल' आँचलिक उपन्यासों की परंपरा की प्रस्तावना भी है और ~~मानदण्डों~~ सफलता के मानदंडों को स्थापित करने वाली रचना भी। इसी परिप्रेक्ष्य में मैला आँचल के नायकत्व पर भी विचार किया जाना चाहिए।

~~पारंपरिक~~ आधुनिक दृष्टि से नायक ~~का व्यक्तित्व~~ वह चरित्र होता है जो रचना के पढ़ने के बाद पाठक के मन में घर कर जाए एवं पूरा कथानक जिसके इर्द-गिर्द बुना गया हो।

मैला आँचल का विश्लेषण करें, तो यहाँ कोई भी चरित्र ऐसा नहीं दिखता जो कि परंपरागत नायक की अवधारणा को स्थापित करता हो या आधुनिक धारणा को। कुछ अर्थों में कालीचरन, प्रशांत या बालनदास में नायकत्व

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के कुछ लक्षण दर्शित होते हैं, पर वे इतने नहीं कि नायक की अवधारणा को संतुष्ट कर सकें।

वस्तुतः यह रेणु की सफलता ही है क्योंकि रेणु घोषित रूप से आंचलिक उपन्यास लिख रहे हैं और आंचलिक उपन्यास में वे 'अंचल' को ही नायक के रूप में प्रस्तावित करना चाहते हैं न कि किसी मानवीय चरित्र को।

अंचल के नायकत्व की अवधारणा पर नजर डालें तो 'मेरीगंज' ही रचना के प्रत्येक बिन्दु पर उपस्थित नजर आता है। मेरीगंज के प्रत्येक भाग एवं हर भाग के प्रत्येक पक्ष को चाहे वह सांस्कृतिक हो, भौगोलिक हो, राजनीतिक हो, सामाजिक हो या आर्थिक हो, लेखक ने उघेड़ कर रख दिया है।

रचना के आस्वादन के पश्चात यदि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

पाठक के मन में सघनता से कुछ मूर्त होता है तो वह है मेरीगंज'

• मैला आँचल में भले ही नायकत्व की पारंपरिक धारणा का अतिक्रमण हुआ हो, परन्तु आधुनिक अर्थों में अंचल का नायकत्व जितनी सफलता से रेणु ने संपादित किया है वह अन्यतम है।

अच्छा

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'मैला आंचल' के नामकरण पर विचार करें। क्या आप इस उपन्यास का इससे बेहतर नाम सुझा सकते हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'मैला आँचल' के नामकरण का विचार नामकरण के प्रतिमानों के आधार पर किया जाना चाहिए।
एक उचित एवं सर्वश्रेष्ठ नामकरण वह होता है जो रचना के प्रतिपाद्य को संश्लिष्ट रूप में पाठक के मन में पूर्ति करने में सफल हो, अर्थव्यंजक हो तथा संक्षिप्त हो। वह समस्त रचना के प्रतिनिधि के रूप में पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
'मैला आँचल' नामकरण पर विचार करें तो आँचल के दो अर्थ सामने आते हैं एक तो अंचल जिसका अर्थ किसी भूभाग से होता है, गाँव से होता है, जहाँ से लोगों की भावनाएँ जुड़ी हों।
दूसरे अर्थों में आँचल 'माँ के आँचल' का प्रतीक है जो अंचल के प्रति लोगों के प्यार, जुड़ाव एवं माँ वसुंधरा के ममत्व की ओर संकेत

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करता है। इस प्रकार आँचल शब्द ममता एवं भौगोलिक विशिष्टता की भावनाओं को धारण करता है।
प्रश्न जब 'मैला' शब्द का आता है तो रेणु की घोषणा पर हरिश्चलना लाज़मी हो जाता है। रेणु लिखते हैं " इसमें शूल भी है, धूल भी है, फूल भी हैं, गुलाब भी है, कीचड़ भी है चन्दन भी। मैं किसी से बचकर नहीं निकल पाया । " परन्तु सोचनीय तथ्य यह है कि जब गुलाब और कीचड़ दोनो हैं, तो सिर्फ कीचड़ पक्ष की प्रधानता क्यों? वस्तुतः रेणु भारतीय ग्रामों की दुर्दशा के यथार्थ को व्यंजित करना चाह रहे थे जहाँ आर्थिक संकट, अंधविश्वास, भूख, गरीबी का प्रसार एवं जीवन संघर्ष इतना ज्यादा है कि कीचड़ गुलाब पर भारी पड़ जाता है। अतः 'मैला आँचल'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एक उपयुक्त नाम सिद्ध होता है।

हालांकि उपन्यास के लिए 'मेरीगंज की दुनिया' या अन्य चरित्र प्रधान नाम सोचे जा सकते हैं, परन्तु संश्लिष्टता व अर्थगंभीरता में 'मैला आँचल' ही सर्वोत्तम ठहरता है और यही रचना का ~~उचित~~ सर्वोचित 'नामकरण' हो सकता है।

अच्छा 9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'दिव्या' उपन्यास में मारिश के नारी-संबंधी दृष्टिकोण-को प्रकट कीजिये। क्या यह दृष्टि उपन्यासकार यशपाल की नारी-दृष्टिकोण का भी प्रतिनिधित्व करती है? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दिव्या यशपाल द्वारा रचित ऐतिहासिक वातावरण प्रधान उपन्यास है। जिसके बारे में आलोचकों का मत कुछ इस प्रकार है कि मारिश के माध्यम से यशपाल ने अपनी जीवन दृष्टि व नारी दृष्टि को प्रक्षेपित करने का प्रयास किया है।

मारिश की नारी दृष्टि पर विचार करें तो वह पारंपरिक, मध्यकालीन तथा प्राचीन दृष्टिकोण का अतिक्रमण करते हुए आधुनिक नारीवाद की प्रस्तावना है। परन्तु पूर्णतः वह ~~नारीवादी~~ चरम नारीवादी मतों की स्थूल स्वीकृति भी नहीं है। मारिश की नारी दृष्टि संश्लिष्ट एवं मानवतावादी स्वरूप को धारण करती है।

मारिश ~~मा~~ मानता है कि 'नारी की कला उसके आकर्षण का ही निखार है'। वह रत्नप्रभा से

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हुए संवाद में स्पष्ट करता है कि नारी सृष्टि की रचना का आधार है और प्रकृति ने यह दायित्व नारी को सौंपा है। वह न तो निर्वाण की अधिकारिणी है और न ही कुलमाता, कुलमहादेवी व कुलवधू के मिथ्या सम्मान को लेकर पुरुष मात्र की छाया बनने की भागी।

नारी के अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व को समर्थित करते हुए मारिश अन्त में प्रस्तावित करता है नारी व पुरुष एक दूसरे से आश्रय का आदान प्रदान करने के लिए सृष्टि द्वारा रचित हुए हैं, न कि विषमतामूलक संबंधों के वहन के लिए।

वह बौद्ध धर्म सहित तत्कालीन दर्शनों को नकारते हुए नारी को त्याज्य मानने के विचार को भी उतनी ही कठोरता से आलोचित करता है जितना कि नारी को भोग्य वस्तु समझे जाने के विचार को।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मारिशा नारी के वेश्या रूप की स्वतन्त्रता को भी उचित नहीं मानता और बताता है कि " जनपद कल्याणी तो प्रत्येक पुरुष की भोग्या है" ।

इस प्रकार मारिशा एक आधुनिक समता मूलक नारी दृष्टि की प्रस्तावना करता है।

यशपाल के मूल्य मार्क्सवादी विचारों से प्रभावित थे जो नारी पुरुष में समता मूलक संबंधों को तथा विवाह को एक शोषण परक व्यवस्था के रूप में प्रस्तावित करते हैं। एक दृष्टि में मारिशा की नारीदृष्टि यशपाल की नारी दृष्टि ही है, परन्तु यशपाल ने विचारधारा की स्थूलता से बचते हुए रचनात्मकता तथा आधुनिकता का वहन किया है।

अच्छा

12/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मैला आँचल में निहित रेणु की राजनीतिक चेतना का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैला आँचल घोषित रूप से एक आंचलिक उपन्यास है और आंचलिक उपन्यास होने के नाते इसमें अंचल विशेष के जीवन के प्रत्येक पक्ष का उद्घाटन किया गया है, चाहे वह सामाजिक हो, आर्थिक हो, धार्मिक हो या राजनीतिक।

यूँ तो यह अंचल विशिष्ट रचना है, परन्तु रेणु ने स्पष्ट लिखा है कि उन्होंने 'मेरीगंज' को पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर रचना लिखी है और इस संदर्भ में रचना अपनी आँचलिकता का अतिक्रमण भी करती है और यह अतिक्रमण प्रखरतम रूप में उभरा है मैला आँचल की राजनीतिक चेतना में।

मेरीगंज जैसे पिछड़े गाँवों की स्वतंत्रता से कुछ पूर्व एवं स्वतन्त्रता के बाद की स्थिति के वर्णन के माध्यम से रेणु की राजनीतिक चेतना प्रदर्शित होती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रेणु बताते चलते हैं कि ~~किस प्रकार~~ भारतीय गाँवों मे लोकतन्त्र का कैसा स्वरूप ~~रहा~~ बनकर उभरा?

यूं तो वे सामाजिक यथार्थवाद के मूल्यों से प्रभावित थे, पर अपनी विचारधारा की स्थूलता से बचते हुए उन्होंने कॉंग्रेस की अच्छाईयों को भी उजागर किया है और सोशलिस्ट पार्टी की बुराईयों को भी।

वे प्रस्तावित करते हैं कि किस प्रकार जाति के आधार पर सोशलिस्ट पार्टी के नेतृत्व का चयन होता है जबकि यह पार्टी जाति, वर्ण जैसी व्यवस्थाओं को नकारती है।

वे कॉंग्रेस पार्टी तथा सोशलिस्ट पार्टी दोनों के अपराधीकरण को ~~प्रस्तुत करते~~। 'चलित्तर कर्मकार' व 'कुलीचन्द कापरा' के माध्यम से उद्घाटित करते हैं तथा बावनदास की मृत्यु ठीक उसी दिन करवाते

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है, जिस दिन गाँधी जी का जादू था जो एक अर्थ में सत्ता द्वारा गाँधीवादी मूल्यों का भी जादू है।

~~इस प्रकार~~ वे लोकतंत्र के विकृत रूप की पहुँच का उद्घाटन करते हुए ग्रामीणों की अनभिज्ञता व अज्ञानता को प्रस्तावित करते हैं।

इस प्रकार रेणु ने मैला आंचल में एक संश्लिष्ट राजनीतिक चेतना प्रस्तुत की है जो यथार्थ का नग्न अनावरण भी है और स्थूल विचारों का अतिक्रमण भी।

बहुत अच्छा

9½/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' नाम में उपन्यास का पूरा सार सन्निहित है। आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'महाभोज' मन्नू भंडारी द्वारा रचित सशक्त राजनीतिक उपन्यास है जिसका नामकरण भी उचित, सारगर्भित एवं प्रतिपाद्य को मूर्त बनाने वाला है।

प्रथमदृष्टया देखने पर आश्चर्य हो सकता है कि राजनीतिक स्थितियों व घटनाओं पर आधारित उपन्यास का एक स्थिति मूलक नाम क्यों? ~~महाभोज~~'

'महाभोज' उस विशेष भोज को कहते हैं जो किसी की मौत पर दिया जाता है और लेखिका ने इस नाम में उपन्यास का पूरा सार सन्निहित कर दिया है।

यह महाभोज सिर्फ बिसू की मौत पर गीदड़ - गिद्धों तथा कौओं का महाभोज ही नहीं, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा आजादी के सपनों की मौत का महाभोज है, जहाँ एक तरफ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्थूल चर्चा करते हुए, हाथों में कीमती शराब के गिलास थामे उच्चवर्गीय लोग डी.आई.जी. साहब के प्रमोशन की पार्टी का जश्न मना रहे हैं; तो अपनी कलम सत्ता के समक्ष गिरवी रख दत्ता बाबू जैसे पत्रकार सरकारी कागज व विज्ञापन मिलने की खुशी।

यह बिसू की ही मौत ~~नहीं~~ नहीं; बिन्दा की प्रस्तावित मौत का भी महाभोज है, तथा मि. सक्सेना के निलंबन का भी।

यह वही संवेदना है जो 'अंधेरे में' के रात के अंधेरे में सत्तापक्ष, नौकरशाह, पत्रकार आदि के प्रोसेशन में दिखती है और यहाँ खुले उजाले में।

अतः महाभोज नाम उपन्यास की संश्लिष्ट संवेदना का वाहक बनने में पूर्णतः सफल हुआ है।

अच्छा

9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation